बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-119 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | मार्च 2024 | मूल्य - 5 रूपए

12 अप्रैल स्ट्रीट चिल्ड्रन अंतर्राष्ट्रीय दिवस के उपलक्ष्य में सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने साझा किए अपने विचार

रिपोर्टर हंसराज, राज किशोर, काजल, किशन

आप तो जानते ही होंगे हर साल 12 अप्रैल को क्या होता है? जी हाँ प्रति वर्ष 12 अप्रैल को दुनिया भर के संगठन स्ट्रीट चिल्ड्रन के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाते हैं जिसके अंतर्गत सड़क पर रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों के बारे में जानते हैं और तरह-तरह की गतिविधियां भी करते हैं। आप सड़क पर अपने गली-मोहल्ले व बाजारों में तरह-तरह का कामकाज करते हुए कामकाजी बच्चों को देखते होंगे। काम हर स्थान पर अलग-अलग होते हैं, जिनमें से कुछ काम के बारे में आइये जानते हैं; ये काम जैसे कबाड़ा बीनना, भीख मांगना, नशे के सामान बेचना, घरों व कोठियों में कामकाज करना, अपनी खुद की तरह-तरह की ठेलियौ पर काम करना, मार्केट में फूल बेचना, पेन बेचना, खिलौने बेचना, फैक्ट्री में से तरह-तरह का काम लाकर उसे करना। बालक नामा के पत्रकारों ने अलग-अलग राज्यों में जाकर सड़क एवं कामकाजी बच्चों से जाना की कामकाजी बच्चों को काम करने के दौरान किन-किन समस्याओं से गुजरना पड़ता है और कामकाज पर लगने का क्या कारण होता है? नोएडा, दिल्ली, जयपुर, हरियाणा व लखनऊ के कामकाजी बच्चों से उनके काम में आने वाली समस्याओं के बारे में बताया। जयपुर में रह रही 9 वर्ष की बालिका राखी (परिवर्तित नाम) ने बताया की मैं वर्तमान में माता-पिता के साथ रहती हूँ, मैं अकसर अपनी माताजी के साथ भीख मांगने के लिए भी जाती हूँ और अपने छोटे-छोटे बहन-भाइयों को भी लेकर साथ में जाती हूँ साथ ही साथ उनकी जिम्मेदारियां भी संभालती हूँ। बालपन से ही जिम्मेदारी होने के कारण मैं कभी पढ़ नहीं पाई, घर वालों ने भी कभी स्कूल में पढ़ने के लिए भी नहीं कहा। हालाँकि मैं पढ़ना चाहती थी परंतु घर की जिम्मेदारियां और छोटे बहन भाइयों को संभालने के कारण मैं कभी नहीं सोच पाई कि मैं शिक्षा प्राप्त करूँ। चेतना संस्था के कार्यकर्त्ता जब बस्ती में घूम रहे थे तब मेरी कार्यकताओं से मुलाकात हुई और उन्होंने अपने बारे में बताते हुए कहा कि हम बच्चों को पढ़ाते हैं, मैं यह सुनकर काफी खुश हुई और फिर मैं रोजाना उनके पास पढ़ने के लिए जाने लगी। चेतना संस्था के कार्यकर्ताओ ने मेरे घर के सदस्यों से बात कर मेरा स्कूल में दाखिला करवाया और अब वर्तमान में मैं कक्षा चार में शिक्षा प्राप्त कर रही हूँ। ऐसा नहीं कि मैंने काम छोड़ दिया है परंतु मैं पहले जगह-जगह पर मांगने के लिए जाती थी पर वह काम बंद कर के अब मैं बस्ती में ही दाल मौठ बेचने का कार्य करती हूँ और मेरा आप सभी से यह अनुरोध है कि जीवन में काम भी जरूरी है और इसीलिए काम के साथ-साथ शिक्षा का प्राप्त करना भी

महत्वपूर्ण है। 12 अप्रैल को स्ट्रीट चिल्ड्रन डे क्यों मनाया जाता है यह बात जब बालकनामा के पत्रकारों ने दिल्ली में रहने बाली 13 वर्ष की बालिका साक्षी (परिवर्तित नाम) से जाना तो साक्षी ने बताया मैं वर्तमान में दिल्ली में झुग्गी बस्तियों में अपने माता-पिता के साथ कबाड़े का कामकाज करती हूँ। जब 12 अप्रैल को लेकर पत्रकारों ने बालिका से चर्चा की तो बालिका ने बताया कि हमें अपने कामकाज के अलावा नहीं पता रहता है कि कामकाजी बच्चों के लिए भी एक दिन मनाया जाता है। हम दिन भर अपने कामकाज में लगे रहते हैं और कामकाज के अलावा पता ही नहीं चलता पूरा दिन कब बीत जाता है। जब पत्रकारों ने बालिका को इस दिन के बारे में जानकारी दी तो बालिका को इस दिन के बारे में जानकारी प्राप्त हुई और बालिका ने बताते हुए कहा कि हम जब कामकाज करते हैं तो कबाड़ी के कामकाज करने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है जैसे घर-घर से कबाड़ा उठा कर लाते हैं तो उस कबाड़े में तरह-तरह के कूड़ा करकट होते हैं और उनमें टूटे कांच आदि भी होते हैं जिनको हम हाथ से बीनते हैं और कई बार तो वे कांच क टुकड़े हाथों में चुभ भी जाते हैं और ऐसी परेशानियों को हर दिन झेलना पड़ता है। ऐसी तरह-तरह के कामकाज के साथ कामकाजी बच्चे अनेक परेशानियों से जूझते हैं। गुड़गांव में कामकाज करने वाले बच्चों से बात किया तो बालिका शिवानी (परिवर्तित नाम) ने बताया की हम सड़क पर खिलौने बेचते हैं, सड़क पर बच्चा तभी कामकाज के लिए निकलता है जब बच्चों के घर में अनेक समस्याएं होती है और हम सड़क पर जब अपने खिलौने बेचते हैं तो हम देखते हैं कि आसपास में बच्चे नशीले पदार्थ बेचते हैं, एक 16 वर्ष का बालक है उसका शिक्षा में मन नहीं लगता था जिसके कारण वह कबाड़ा बीनने के कामकाज के लिए लग गया। उस कामकाज में ज्यादा आमदनी ना होने के कारण वह सड़क पर और लोगों से एवं बच्चों से मिला और उसकी जान पहचान बढ़ी और वह नशीले पदार्थ जैसे गांजा इत्यादि बेचने के कार्य में लग गया और इतना ही नहीं वह जब यह कार्य करते हैं तो पुलिस वालों को खबर हो जाती है तो वह इन लोगों के चक्कर में हम लोगों को भी इधर-उधर भगना पड़ता है क्योंकि सड़क पर पुलिस वाले काम करने नहीं देते हैं इसीलिए हमें इन परेशानियों से जूझना पड़ता है। नोएडा में सड़क और कामकाजी बच्चों से भी इस विषय पर जानकारी प्राप्त की और नोएडा सेक्टर 62 में अपनी खुद की थैली पर गुटखा, बीड़ी ,पेप्सी, नमकीन आदि बेच रहे जिशांत (परिवर्तित नाम) ने बताया की मैं वर्तमान में नोएडा सेक्टर 62 में अपनी माताजी के साथ झुग्गी बस्ती में रहता हूँ । वर्तमान में मैं काफी समस्याओं से जूझ रहा हूँ, मेरे पिताजी की मृत्यु हो चुकी है उनकी हत्या किसी के द्वारा की गई थी, पिताजी की मृत्यु

शेष पृष्ठ 2 पर

सीवर लाइन पर बने कच्चे आशियानों में होता है असुरक्षित महसूस, हादसों के बाद सहमे बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

कठिन परिस्थितियों में अक्सर कोई सहारा देने के लिए राजी नहीं होता है। नोएडा सेक्टर 49 की बस्तियों में बच्चे ऐसी जगह पर रहते हैं जहां पर पता नहीं की कब क्या हो जाए। इसी क्रम में बस्ती में रहने वाले बच्चों से जब पत्रकारों ने जाना तो बच्चों ने बस्ती की एक ऐसी बात को बताते हुए कहा जिसे सुनकर आप भी चौंक जाएंगे। सीवर लाइन का नाम तो सभी जानते हैं, इस बस्ती में लगभग 150 घर मौजूद है और यह सारे घर सीवर लाइन पर बने हुए हैं जिसमें पता नहीं कब कैसी समस्या आ जाए इस बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता, घर के बगल में से एक बड़ा सा नाला भी जा रहा है। पहले हम आपको इस बस्ती में एक घटना के बारे में बताते हैं जिसे बच्चों ने बड़ी दुख के साथ बताते हुए कहा की कुछ महीने पहले की बात है। बरसात का मौसम चल रहा था और इस स्थान पर जितने भी घर मौजूद है कभी भी इन सभी घर का गिरने का खतरा मौजूद रहता है, पता नहीं कब किस पर समस्या आ जाए? सीवर लाइन कभी भी फट जाती है जिसके कारण पानी अंदर ही अंदर लीक करने लगता है जिससे घर गिरने का खतरा रहता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बरसात के कारण पानी जमीन के अंदर और सिविल लाइन के ऊपर तक आ जाता है और घर के अंदर सीलन आने लगती है जिस कारण भी घर गिरने का खतरा रहता है। एक दिन रात के

11:00 बजे की बात है, बरसात हो रही थी और इस बस्ती में एक व्यक्ति ने शराब पी रखी थी और वह अपने काम से कहीं बाहर गए थे और जब वे घर की ओर लौट रहे थे तब बारिश काफी तेजी से हो रही थी और वह अंकल अपने लोहे के जीने से सीढ़ी चढ़ रहे थे तभी अचानक से अंकल का पांव फिसला और वह एक बगल के गड्ढे में गिर गए, जिस गड्ढे में अंकल गिरे उस जगह पर पहले घर मौजूद था और वह भी सीवर लाइन फटने के कारण घर गिर गया था और अंकल का घर उसी गड्ढे के बगल में मौजूद था अंकल जैसे ही गिरे वैसे ही वह बगल के गड्ढे में बारिश का पानी काफी भर गया था और अंकल वह गड्ढे में गिरने के कारण उस गड्ढे में बड़ा सा पाइप भी मौजूद था जो नाले से जुड़ा हुआ था अंकल उस पाइप में घुस गए और नाले तक आ गए पर नाले के बगल में ही एक बूढी अम्मा का घर मौजूद था पर वह अम्मा बोल नहीं सकती थी क्योंकि वह गूंगी थी, अम्मा ने उन अंकल को देख लिया और अम्मा ने सड़क से आते जाते कई लोगों को बुलाने की कोशिश की, इशारा भी किया पर कोई उनकी बात को नहीं समझा पर वह अंकल नाले के किनारे तक पहुंच गए इस प्रकार नाले का एक जाल भी है वहां पर जाकर अंकल का शरीर फस गया और वह वहीं पर वे अटक गए। झुग्गी बस्ती में जब यह बात पता चली की अंकल पूरी रात घर पर नहीं आए तब लोग काफी घबरा गए और उन को ऐसा शक हुआ कि वह इस नाले में गिर गए और यह शक सही निकला जब यह बात को लेकर हंगामा मचा तो फिर वह गूंगी अम्मा ने कई लोगों को इशारे से बताया और फिर लोगों ने नाले में ढूंढना शुरू किया और जिस जाल में अंकल फस गए थे वहां पर जाकर बस्ती के लोगों ने ढूंढ निकाला और फिर उन्हें पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। बच्चों ने बड़ी दुख के साथ इन बातों को बताते हुए कहा की जैसे यह अंकल के साथ हादसा हुआ है ऐसा इस बस्ती में कभी भी किसी के साथ भी हो जाता है फिर चाहे वह इस नाले में गिर जाए या घर समेत इस नाले में गिर जाए पर इस गांव का प्रधान कोई कार्यवाही नहीं करता। हम बच्चों को हर दिन यह बात सताती है कि हमारे साथ भी ऐसा हादसा ना हो जाए।

पश्चिम दिल्ली के कई इलाको में बच्चों से करवाई जा रही शराब की डिलीवरी

बातूनी रिपोर्टर - एहतरामिल,
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

पश्चिम दिल्ली की झुग्गियों के लगभग हर गली, मोहल्ले में नशा बिकता है। यहां नाबालिग बच्चे नशे के कारोबार में लिप्त हैं, स्थिति यह हो गई है कि नशा तस्करों को बच्चे रास्ता दिखाते हैं और दाम बताते हैं। बच्चे ग्राहकों को देखकर पहचानने लगे हैं कि वह गली में नशा खरीदने आ रहा है या किसी अन्य काम से? जब उन्हें पुलिस कर्मी होने का शक होता है तो वह तुरंत अपने मालिक को इसकी जानकारी देकर आगाह कर देते हैं। हरियाणा व आसपास के राज्यो से ये नशा दिल्ली के सीमावर्ती इलाकों में लाया जाता है। ऐसा ही एक मामला सामने आया जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिम दिल्ली के वाल्मीकि कैंप का दौरा करने गए तो उन्हें वहां के बातूनी रिपोर्टर एहतरामिल ने बताया कि उनके इलाके में विपिन (परिवर्तित नाम) नाम का लड़का रहता है जो अवैध शराब का व्यापार करने वाले एक सांसी परिवार के पास काम करता है। वह ग्राहकों तक शराब सप्लाई करने का काम करता है। उसे या उसके जैसे अन्य नाबालिगों को इस काम पर रखने का मुख्य मकसद उनकी कच्ची उम्र है जिससे उन पर पुलिस की नजर नहीं पड़ती। उसने बताया कि यह काम उसे मजबूरी में करना पड़ता है क्योंकि उसके माता-पिता दोनो ही मजदूरी का काम करते है फिर भी घर खर्च का पैसा पूरा नहीं हो पाता। उसने बताया कि वाल्मीकि कैंप व आस पास के इलाके में अवैध शराब, गांजा, मादक पदार्थ इत्यादि धड़ल्ले से बिकता हैं। पास के ही बस स्टैंड पर जाकर इलाके के किसी भी व्यक्ति से नशे के बारे में सिर्फ पूछना भर है। इलाके के लोगों का कहना है कि छोटी-छोटी दुकानों पर शराब के साथ-साथ गांजा और अन्य नशीले पदार्थ भी बेचे जाते हैं। छोटे बच्चे नशीली दवाएं खरीदते और बेचते हैं। इसका असर न सिर्फ बच्चों पर पड़ रहा है, बल्कि महिलाओं और लड़कियों को भी आने-जाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। जिन बच्चों को स्कूल में पढ़ाई करनी चाहिए वह शराब बेच रहे है। ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि माता-पिता सही ढंग से या फिर मजबूरी में बच्चो के पालन-पोषण पर ध्यान नहीं देते। विपिन ने बताया कि वो सांसी परिवार से शराब लेकर ग्राहकों तक पहुंचाने के बदले उसे प्रति बॉटल कमीशन मिलता है। वो प्रतिदिन दो सौ रुपए कमा लेता है जिससे वो अपने परिवार की आर्थिक मदद करता है और खुद के खाने का जुगाड भी कर लेता है। कुछ पड़ोसियों ने इसकी जानकारी विपिन के माता-पिता को भी दी की वो अपने बच्चे को समझाए की इस प्रकार के नशे के कारोबार में ना लिप्त हो लेकिन उन्होंने सबकी बातो को अनसुना कर दिया। विपिन स्कूल नहीं जाता केवल ग्राहकों तक शराब सप्लाई का काम करता है या खाली समय में कंचे खेलता है जिस वजह से उसका भविष्य लगातार अंधकार की ओर बढ़ रहा है।

स्ट्रीट चिल्ड्रन अंतर्राष्ट्रीय दिवस के उपलक्ष्य में सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने साझा किए विचार

पृष्ठ 1 का शेष

होने के कारण अनेक परेशानी से गुजरना पड़ रहा है। जब पिताजी इस दुनिया में मौजूद थे तो मैं रोजाना स्कूल जाता था और पिताजी और माताजी दोनों दुकान संभालते थे, मैं स्कूल से आने के बाद उनकी मदद करवाता था। उस समय भी माताजी की तबीयत खराब रहती थी और अब वर्तमान में भी माता जी की तबीयत खराब रहती है हालाँकि अब मेरा स्कूल भी छूट गया है और अब मैं दुकान चलाने में व्यस्त रहता हूँ, दुकान चलाने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पुलिस वालों को अलग से रिश्वत देनी पड़ती है, महीने के 3000 और अथॉरिटी वालों को अलग से रिश्वत देनी पड़ती है यदि दोनों में से किसी को ना दो तो परेशान करते हैं। इतना ही नहीं अचानक से जाकर रेहडी का सामान गिरा देते है या रेहडी का सामान तोड़ देते और उन्हें भर कर ले जाते हैं। सबसे ज्यादा अत्याचार उन्हीं के साथ होता है जो रिश्वत नहीं देता है अथॉरिटी वाले महीने के 10000 मांगते हैं और गुटखा, बीड़ी-सिगरेट आदि हम बेचकर पूरे महीने में इतना पैसा नहीं कमा पाते कि हम उन्हें महीने के 10000 दे इसीलिए हमें ऐसी परेशानियों से हमेशा जूझना पड़ता है। जब पिताजी थे तो इन परेशानियों से कम जूझना पड़ता था पर अब परेशानी दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। नोएडा मैं एक मूर्ति के नजदीक झुग्गी स्थित है और उस स्थान पर भी अनेक बच्चे तरह-तरह का कार्य करते हैं। बालक विष्णु (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जैसा की आप जानते हैं कि गरीब होने के कारण काफी समस्याओं से जूझना पड़ता है और दवाई तक के पैसे नहीं जोड़ पाते हैं इस कारण अन्य कार्यों के लिए कर्ज भी लेना पड़ता है। हमारे यहां पर एक बालिका है जिसकी उम्र 17 वर्ष है और वह कोठियां में कामकाज करने के लिए जाती है क्योंकि उसके पिताजी ने घर बनवाने के लिए कर्ज लिया था और अब वह कर्ज बढ़ता ही जा रहा है जिस कारण बालिका को कामकाज करना पड़ता है। उसे महीने के 9000 मिलते हैं और वह घरों में जाकर घर की साफ सफाई और बर्तन कपड़े धोना आदि कार्य करती है। आप तो जानते ही हैं मजबूरी का फायदा हर कोई उठाता है। आप कोई से भी कोने में चले जाए बच्चे तरह-तरह का कामकाज करते हुए जरूर नजर आते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो बच्चों का नाजायज फायदा उठाते हैं और कम पैसे देकर ज्यादा कामकाज करवाते हैं। इस विषय पर बात करने के दौरान बच्चों से यह जानने का भी प्रयास किया गया कि वर्तमान में जैसे बच्चे दिन पर दिन कामकाज की और बढ़ते जा रहे हैं वह कामकाज में ज्यादा न पहुंचे ऐसे में क्या किया जाए? अलग-अलग स्थान से बच्चों ने अपने विचार बताते हुए कहा।

इस प्रकार नोएडा में रहने वाली बालिका ने बताया कुछ पाने के लिए मेहनत करना आवश्यक है पर बच्चा समझ कर हर कोई फायदा उठाने लगता है इस कारण बच्चों को कामकाज के साथ-साथ शिक्षा का ज्ञान और अन्य जानकारी प्राप्त करना चाहिए। गुड़गांव में रहने वाली बालिका ने बताया बच्चे जगह-जगह पर तरह-तरह का कार्य करते है और जरूरी नहीं है की पुलिस वाले या अथॉरिटी वाले ही बच्चों से रिश्वत लेते हैं बल्कि गांव के लोग भी और सरकारी कार्यकर्ता भी बच्चों से रिश्वत लेते हैं पर जब बच्चे शिकायत करने की सोचते हैं तो वह इस कारण फंस जाते हैं कि यदि हम शिकायत कर देंगे तो फिर हमें इस स्थान पर काम नहीं करने दिया जाएगा।

हमारा यह अनुरोध है कि जो भी रिश्वत लेता हुआ पकड़ा जाए या उसकी शिकायत दर्ज हो तो उसे सस्पेंड कर दिया जाए या उसे कड़े से कड़ा दंड दिया जाए, जयपुर में कामकाजी बच्चों ने बताते हुए कहा अनेक राज्यों के यहाँ अनेक स्थानों से बच्चे कार्य करते हैं पर कुछ ऐसे बच्चे भी होते हैं जो कामकाज के साथ-साथ शिक्षा प्राप्त भी कर सकते हैं पर वह चाह कर भी ऐसा करना नहीं चाहते पर हमारा उन सभी बच्चों के माता-पिता से अनुरोध है सभी माता-पिता जागरूक हो और बच्चों को शिक्षा के लिए विद्यालय जरूर भेजें। लखनऊ में रह रही सोनी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भारत में अधिकतर मात्रा में बच्चे गरीब घर से होते हैं और गरीब होने के कारण स्कूल नहीं पहुंच पाते हैं, इस प्रकार कोई ना कोई समस्या में फंस जाते हैं। बड़ी-बड़ी इमारतों में लोग रहते हैं और वह बड़े घर से निर्भर होते हैं, बड़ी-बड़ी इमारतों में रहने वाले लोग यदि एक बच्चे को भी सहारा देंगे तो अनेक बच्चों की मदद हो पाएगी और वह शिक्षा की और पहुंच पाएंगे अतः वे भी अपने सपनों और बचपन को जी पाएंगे।

गंदगी और बदबू से बच्चों का जीना हुआ मुश्किल

बातूनी रिपोर्टरः -मॉक्सिना,
बालकनामा रिपोर्टरः -राजकिशोर

आज हम आपको एक ऐसी हकीकत के बारे में बताने जा रहे हैं जिससे वास्तव में हजारो बच्चों का जीवन प्रभावित हो रहा और उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। सड़क पर काम करने वाले बच्चों के परिवार जो की आर्थिक रूप से बहुत कमजोर होते हैं इसलिए बहुत ही सस्ती झोपड़ियां किराए पर लेते हैं जहां पर गंदगी, कीचड़ और जल भराव की समस्या आम होती है। ऐसी जगहों पर कूड़े-कचरे के ढेर लगे होते हैं क्योंकि यहां कूड़ा आसपास के लोग फेंक जाते है जिससे बदबू, मक्खी-मच्छर इत्यादि पनपते हैं और जिस कारण बीमारी फैलने का डर सदैव रहता है। इस बदबू के कारण सांस लेना भी दूभर होता है और खाना खाना भी बहुत मुश्किल होता है, बच्चों के स्वास्थ्य पर इस बदबू का बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। जब हमारे बालकनामा पत्रकार राजकिशोर ने घाटा कांटेक्ट पॉइंट का दौरा किया तब वहां के बातूनी पत्रकारों ने अपनी समस्या सामने रखी तथा पत्रकारों ने बातचीत के दौरान बताया कि कुछ दिनों से हमारी झुग्गियों में कुछ लोग बाहर से आकर कूड़े एवं कबाडी ट्रैक्टर में लोड करके हमारे झुग्गीयो के आसपास फेंक कर चले जाते हैं और ये एक दिन की बात नहीं प्रत्येक दिन वह ऐसे ही करते हैं जिससे हमें बहुत ही ज्यादा दिक्कतों का सामना करना पड़ता है और हमें इससे बहुत ही ज्यादा नुकसान भी होता है क्योंकि उससे निकलने वाली बदबू जिससे कि हमारे शरीर को बहुत ही ज्यादा नुकसान पहुंचता है और हमें सांस लेने में भी बहुत ज्यादा दिक्कत होती है क्योंकि जब सड़ा-गला कचरा आसपास फेंकते है तो हमें गंदे वातावरण में साँस लेने में बहुत ही ज्यादा दिक्कत होती है और जब हम उसे देखते हैं तो हमें खाना भी नहीं खाया जाता है और बच्चों को तो इससे बहुत ही ज्यादा नुकसान भी हो रहे हैं। बच्चों के साथ उनके माता-पिता, आसपास के पड़ोसी भी इससे बहुत ही ज्यादा प्रभावित है उनके शरीर पर इसके दुष्प्रभाव दिखाई दे रहे हैं बुखार, सांस लेने में दिक्कत, डेंगू आदि लोगों को परेशानियां उठानी पड़ रही है।

स्कूल में बड़े बच्चे करते है नशा व दुर्व्यवहार जिस कारण छोटे बच्चो को झेलनी पड़ती है परेशानियां

बालकनामा रिपोर्टरः आकाश,
बातूनी रिपोर्टरः नैतिक

हम सभी जानते हैं कि विद्यालय ज्ञान का मंदिर है। इसे बच्चों के लिए दूसरा घर भी कहा जाता है, जो एक सुरक्षित स्थान है जहां छात्र सुरक्षित महसूस करते हैं और अपनी पसंद के विषय सीखने और जीवन की आवश्यक बातों को सीखने के लिए स्वतंत्र होते हैं। हाल ही में जयपुर की एक कच्ची बस्ती जयसिंह पुरा खोर से 2-3 किलोमीटर की दूरी पर राजकीय विद्यालय के संदर्भ में चौंका देना वाली घटना सामने आई है, जब बालकनामा रिपोर्टर आकाश ने इस सन्दर्भ में विद्यालय में जाने वाले बच्चों से बात की तो बातूनी रिपोर्टर नैतिक ने बताया की हमारे स्कूल में बड़ी कक्षाओं (9-12) के कुछ शरारती लड़के बाथरूम, खाली कमरों में या छत पर बीड़ी सिगरेट, तम्बाकू का नशा करते है, कभी - कभी तो बाथरूम में शराब की बोतले भी टूटी हुई मिलती है। यदि कोई उनके बारे में शिकायत करे तो वे उसे डराते धमकाते एवं तंग करते है और मारपीट भी करने लगते हैं। हालाँकि स्कूल प्रशासन में से कुछ अध्यापकों को इस बात की जानकारी है लेकिन शरारती बच्चे शिक्षकों के साथ भी गलत व्यवहार करते हैं, इसी कारण शिक्षकों के द्वारा भी उन बच्चों की समझाईश नहीं दी जाती है अतः इन शरारती बच्चों में किसी भी प्रकार का अनुशासन नहीं है और इस कारण स्कूल जाने वाले अन्य बच्चे बाथरूम में भी जाने में संकोच और डर महसूस करते है। सड़क एवं कामकाजी बच्चों के स्कूल जाने में वैसे भी कई समस्याएं है ऐसे में स्कूल जाने के बाद भी वही असुरक्षित वातावरण बच्चों की रुचि व आकांक्षाओं को समाप्त कर रहा है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

महत्वाकांशी जीवन जीने की चाह में बच्चे कर रहे खुद के ही घर में चोरी

ब्यूरो रिपोर्ट

ऐसा कई बार होता है कि जब घर के बड़े सदस्य जैसे माता-पिता, भाई-बहन आदि अपने बच्चों पर ध्यान नहीं देते हैं और वह घर में ही ऐसे कार्य कर रहे होते हैं जिसे देखकर घर के सदस्य अनदेखा करते हैं। नोएडा के सूरजपुर गांव के आसपास मौजूद एक गांव में पत्रकारों ने बच्चों से मुलाकात की और वे बच्चे रोजाना स्कूल जाते हैं एवं वे नन्हे परिंदे वेन पर भी पढ़ने के लिए आते हैं। मुलाकात के दौरान 14 वर्ष की बालिका ने एक 10 वर्ष के बालक की ऐसी कहानी को बताया, जिस कहानी को आपको भी सुनना चाहिए और इस कहानी को सुनने के बाद सतर्क रहना चाहिए। बालिका ने बताया हमारे घर के बगल की एक गली में 10 वर्ष का एक बालक है जिसका परिवर्तित नाम रवि है जो कि वह प्राइवेट स्कूल में कक्षा तीन में शिक्षा प्राप्त करने के लिए रोजाना स्कूल जाता है और उसके घर में चार सदस्य हैं जिसमे दो भाई और माता-पिता शामिल हैं। पिताजी सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी करते हैं और माताजी कोठियों में खाना बनाना व बर्तन धोना आदि काम करने के लिए जाती हैं और बड़ा भाई है जो फैक्ट्री में कामकाज करने के लिए जाता है। रवि के घर के मुख्य सदस्य इसके पिताजी है, घर में कहीं भी किसी को जाना होता है तो पिताजी की इजाजत लेनी पड़ती है और यदि पैसे भी चाहिए तो पिताजी से पूछना

पड़ता है और पिताजी ही माताजी के पैसे बड़े भैया के पैसे और अपने पैसे एक ऐसे स्थान पर रखते हैं जिसकी जानकारी पिताजी के अलावा किसी को नहीं होती है। रवि घर में सबसे छोटा है इस कारण पिताजी और माता जी रवि से काफी प्यार भी करते हैं और वह यदि कोई छोटी-मोटी गलती कर दे तो उसे गलती पर ध्यान भी नहीं देते हैं और उसे अनदेखा कर देते हैं। कुछ दिन पहले की बात है रवि दिन पर दिन अपने 14-15 वर्ष के बड़े-बड़े दोस्तों के साथ घूमने लगा और यह बात उसके पिताजी और माताजी को भी पता थी और एक दिन पिताजी अपने पूरे घर के पैसे उसी स्थान पर रख रहे थे जिस स्थान पर पिताजी को ही पता था और तभी रवि ने पीछे से देख लिया और पिताजी के जाने के बाद उसने कुछ दिन बाद उस स्थान से पैसे निकालना शुरू कर दिया वह रोजाना 500, 1000, 2000 रुपए निकालता और पैसे निकालने के बाद वह अपने दोस्तों के ऊपर अन्य चीजों में खर्च करता जैसे वह रोजाना मॉल में जाकर पिज्जा बर्गर खाता, कपड़े खरीदता और वह यह सारी चीज दोस्तों को खिलाने के बाद घर पर भी लेकर आता और माता जी को, पिताजी को, बड़े भैया को भी खिलाता। घर वाले यह भी पूछते कि यह सब चीज कहां से लाते हो तो रवि कह देता कि मेरे दोस्त मुझे खिलाते हैं और उनके माता-पिता उन्हें पैसे देते हैं इसीलिए मैं भी घर पर लेकर आ जाता हूं, घर वाले सोचते कि यह सही कह रहा है पर एक दिन रवि का दोस्त रवि से कहता कि मुझे 2000 की जरूरत है और तुम मुझे दे दे मैं तुझे बाद में लौटा दूंगा इस पर रवि अपने दोस्त को 2000 दे देता है और रवि का दोस्त वो पैसे लेने के बाद कुछ ही घंटे बाद रवि के घर पर रवि के पिताजी को देकर आ जाता और रवि के पिताजी पूछते यह आप क्यों दे रहे हैं तब रवि का दोस्त बताता मैं रवि का दोस्त हूं और वह रोजाना आपके यहां से पैसे निकाल कर ले जाता है पर मुझे भी लगता था कि आप उसे पैसे देते हैं इस कारण वह इतने सारे पैसे रोजाना लेकर खर्च करता है पर मुझे अच्छा नहीं लगा, इस कारण मैं आज आपके यहां पर यह पैसे लेकर आया कृपया आप मेरा नाम मत लीजिएगा रवि के पिताजी बोले आपने बताया ठीक है आप चिंता मत करो और जब रवि घर पर लौट कर आया तो पिताजी ने रवि से जाना कि तुम्हारा ऐसा कौन सा दोस्त है जो तुम्हें रोजाना इतने पैसे देता है तो रवि ने कहा मेरा दोस्त है जो मुझे पैसे देता है तो पिताजी ने गुस्से में आकर एक थप्पड़ लगाया तो रवि ने सारी सच्चाई बता दी। रवि ने बताया, एक दिन आप जिस स्थान पर अपने पैसे रखते हो उस दिन मैंने वहां पर आपको पैसे रखते हुए देख लिया था इस कारण मैं रोजाना वहां से पैसे निकालने लगा क्योंकि आप लोग मुझे 10 से 20 ही दिया करते थे और मेरे पास बिल्कुल पैसे नहीं रहते थे इस कारण मेरी आदत बिगड़ती चली गई और मैंने पैसे निकालना शुरू कर दिया, पिताजी ने रवि को काफी पीटा और फिर उसे समझाया इस प्रकार फिलहाल रवि अब ऐसी हरकतें नहीं करता है।

आपदाओं में अवसर तलाश कर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के जीवन में आ रहे सकारात्मक बदलाव

बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी,
बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर

आज हम आपको ऐसे बच्चों की कहानी बताने जा रहे हैं जिनकी कहानियां आपने बालकनामा में पहले भी पढ़ी होंगी जैसे की झोपडी में आग लग गई और बच्चे पेट भरने के लिये छोटे-मोटे काम करने लगे, कहीं खबर आती है की बच्चे चोरी कर रहे हैं, कुछ बच्चे पलायन कर रहे है इत्यादि। इस प्रकार और भी बच्चों की बहुत सी समस्याएं बालकनामा के द्वारा आपके सामने समय-समय पर आई है। आज हम आपको ऐसे बच्चों की कहानी बताने जा रहे है जो बच्चे पहले बाल मजदूरी करते थे, वो बच्चे पहले सड़क पर काम करके अपना गुजारा करते थे और वही सड़क एवं कामकाजी बच्चे चेतना संस्था और बढ़ते कदम से जुड़ने के बाद उन्होंने बाल अधिकारों के बारे में जाना, उनका रुझान शिक्षा के प्रति हुआ। चेतना संस्था ने उन बच्चों का उचित मार्गदर्शन किया और उन्हें स्कूली शिक्षा का महत्व बताया बच्चों को एक उम्मीद की किरण नजर आई और वह बच्चे संस्था के सहयोग और मार्गदर्शन से स्कूली शिक्षा से जुड़े परिणामस्वरूप आज वह बच्चे उज्जवल भविष्य के सपने देख रहे हैं उन्ही बच्चों मे एक का नाम है अरमान (परिवर्तित नाम) जो की 13 साल का बालक है, जो पहले झोपडीयों में और सड़कों पर काम करता था जिसे पढ़ने

का तो मन करता था लेकिन किसी न किसी मजबूरी के कारण स्कूल नहीं जा पाता था, लेकिन जब बढ़ते कदम ने बताया कि शिक्षा हर बच्चे का अधिकार है और यह बिल्कुल मुफ्त है तो उसने चेतना संस्था के कांटेक्ट पॉइंट पर पढ़ना शुरू किया और शुरूआती शिक्षा ली और उसके बाद संस्था के सहयोग से उसने स्कूल में एडमिशन प्राप्त हुआ। आज जब बालकनामा के रिपोर्टर राज किशोर ने अरमान से बात की एवं उनकी समस्याएं जानने की कोशिश की जिसमे उन्होंने बताया कि उन्हें स्कूल जाना बहुत ही अच्छा लगता है लेकिन वह अपने घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण वह स्कूल नहीं जा पा रहे थे। अन्य बच्चों को देखकर उन्हें भी लगता है कि हम भी स्कूल जाएं लेकिन उन्हें नहीं लगता था कि उनका यह सपना कभी पूरा हो पाएगा फिर चेतना संस्था की तरफ से सड़क एवं कामकाजी बच्चों को फ्री में शिक्षा दिया जाता है और उन्हें खाने को भी एवं खेलने के लिए भी हर एक चीज की सुविधा दी जाती है तब मेरा हौसला बढ़ा। संस्था ने मुझे पढ़ाया-लिखाया और मेरा स्कूल में नामांकन करवाया हैं और हमारे जैसे बहुत से वंचित बच्चों को संस्था ने स्कूली शिक्षा से जोड़ा है। चेतना संस्था के द्वारा सड़क एवं कामकाजी बच्चों को बहुत ही अच्छी मदद मिल रही है और हम इस प्रयास से ही स्कूल जा पा रहे है।

अभिभावकों की रूढ़िवादी सोच के कारण बालिकाएं हो रही है शिक्षा से वंचित

बालकनामा रिपोर्टरः काजल,
बातूनी रिपोर्टरः संकू

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और जब रिपोर्टर बदरवास बस्ती पहुंची तो बहुत सी बालिकाएं अपनी - अपनी झुग्गियों के पास खेल रही थी और कुछ बालिकाएँ घर के काम कर रही थी तब रिपोर्टर ने बालिका टिंकू (परिवर्तित नाम) और करमा (परिवर्तित नाम) से बातचीत की और पूछा कि आप आज आप विद्यालय नहीं गए क्या? तब बालिका टिंकू ने बताया की इस बस्ती से कोई भी लड़की स्कूल नहीं जाती हैं। हमारे माता-पिता सिर्फ लड़कों को ही स्कूल भेजते हैं। जब रिपोर्टर टिंकू और करमा से बात कर रही थी तो इतने में ही उनके पिताजी झुग्गी से बाहर निकाल कर आए और उन्होंने कहा कि हम हमारी बच्चियों को घर से बाहर नहीं भेजते हैं क्योंकि जमाना खराब है और हमारे समाज में रिवाज है की लड़कियां घर से बाहर

नही जाती है। रिपोर्टर ने उनके पिताजी से पूछा कि यदि कभी लड़कियों के लिए बस्ती में शिक्षा का केंद्र खोला जाए तो क्या आप उन्हें पढ़ने भेजेंगे? तब बालिका के पिताजी ने कहां की बस्ती में ही पढ़ने की व्यवस्था होती है तो पढ़ने देंगे लेकिन स्कूल कभी नहीं भेजेंगे।

लड़कियों को शिक्षित करने से जीवन संरक्षित होता है और मजबूत परिवारों, समुदायों और अर्थव्यवस्थाओं का निर्माण होता है यह सब बातें सुनने में अच्छा लगता है लेकिन आज भी जयपुर की कई कच्ची बस्तियों में अभिभावकों की रूढ़िवादी सोच के कारण बालिकाएं शिक्षा से वंचित हैं।

मौसर प्रथा के कारण बच्चों का बचपन हो रहा है प्रभावित

बालकनामा रिपोर्टर : काजल,
बातूनी रिपोर्टर : रहीम

राजस्थान के रीति रिवाजों के बारे में हमेशा अलग-अलग परंपराओं के बारे में सुना गया है लेकिन एक ऐसी प्रथा जिसमें जानवरों की बली तभी मानी जाती है जब बच्चों का विवाह किया जाए। इस प्रथा के बारे में पूरी जानकारी लेने के लिए जब बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की कच्ची बस्ती लखेसरा का दौरा किया और बच्चों से मौसर प्रथा के बारे में चर्चा की तो बातूनी रिपोर्टर रहीम ने बताया की इस प्रथा में जब घर में किसी बुजुर्ग का देहांत हो जाता है और उसके 40 दिन पूरे होने पर जब भोजन किया जाता है तो लगभग 10 बकरों की बली दी जाती है लेकिन इन बकरों की बली सूखी या खाली ना जाए अर्थात बकरों की बली तभी मानी जाएगी जब किसी लड़के या लड़की का विवाह किया जाए। इस प्रथा में छोटी उम्र में ही विवाह कर दिया जाता हैं और बच्चे अपने बचपन जीने से वंचित हो जाते हैं। इतना ही नही बालकनाम के रिपोर्टर बस्ती में उन बच्चों से भी मिली जिनका मौसर प्रथा के अंतर्गत विवाह हो चुका है, विशेष तौर पर लड़कियां घर के कार्यो में लगी है और उनको बस्ती के बाहर की दुनिया के बारे में कोई जानकारी नही हैं।

खराब गटर के कारण बच्चे हुए परेशान, लगातार हो रहे बीमार

रिपोर्टर किशन

सड़कों पर जब सड़क एवं कामकाजी बच्चे कार्य कर रहे होते हैं तो कई बार ऐसी स्थितयां भी होती है जिन्हे की अनदेखा नहीं किया जा सकता कहने का आशय है की उन्हें कई सारी परेशानीओं के साथ कार्य करना पड़ता है। जब निजामुद्दीन क्षेत्र की कुछ गलियों में बालकनामा के पत्रकार घूम रहे थे तब पत्रकारों ने एक दुकान पर 14 वर्ष के बालक को होटल में कार्य करते हुए देखा तो पत्रकार उस बालक के पास पहुंचे और बालक से जानने का प्रयास किया कि यहां पर क्या ऐसी चीज है जिससे आपको दिक्कत होती है? बालक ने बताया, मैं इस होटल में कार्य करता हूं और मुझे मालिक से कोई भी शिकायत नहीं है पर एक चीज ऐसी है जिसे रोजाना देखकर भी अनदेखा करना पड़ता है और काफी बदबू का भी सामना उस चीज से करना पड़ता है। हमारी दुकान के 50 मीटर की दूरी पर

एक ऐसा गटर है जो हरदम भरा रहता है, और उस गटर के आसपास में और भी गटर मौजूद है पर वह गटर हर दम भरा रहता है उस गटर की हर हफ्ते में सफाई भी होती है पर वह हरदम भर जाता है शायद ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उस गटर के अंदर में कोई दिक्कत है इस कारण वही गटर हर दम भरा रहता है। उस गटर के ऊपर मल मूत्र और पानी का भराव रहता है जिसके कारण काफी बदबू आती है और इस गटर के कारण लोग हमारी दुकान के पास आते भी नहीं है। इस गटर के कारण कई बार में खुद बीमार पड़ चुका हूं। इस रास्ते से कई लोग एवं बच्चे निकलते हैं और सुबह के समय अधिकतर बच्चे स्कूल के लिए इसी रास्ते से आते जाते हैं और इस गटर को देखकर बच्चों का मन खराब हो जाता है और बदबू आती है जिस कारण आसपास में रहने वाले बच्चे एवं बड़े लोग बीमार पड़ रहे हैं। सफाई करने वाले कई कर्मचारी भी आते हैं पर वह सफाई तो करवा देते हैं और जब उन्हें यह बताया जाता है कि यह गटर हर दो घंटे बाद भर जाता है तो सफाई करने से क्या फायदा है?तब वे कुछ नहीं बोलते बस इतना कहते हैं कि इसको जल्द ही ठीक करवाएंगे और वह फोटो खींचकर ले जाते हैं परन्तु अंततः कोई कार्रवाई नहीं होती है, मेरा यही कहना है कि यह गटर जल्द से जल्द ठीक हो जाए ताकि हमारी दुकान पर लोग आ सके और आसपास में रहने वाले लोग और बच्चे बीमारी का शिकार होने से बच सके।

प्रशासन की अनदेखी से परेशान हो रहे बच्चे, नहीं मिल पा रही मूलभूत सुविधाएं

बालकनामा रिपोर्टरः आकाश,
बातूनी रिपोर्टरः तोहित

हमारे बालकनामा रिपोर्टर आकाश ने जयपुर की एक कच्ची बस्ती जेडीए बापू. बस्ती को दौरा किया तो रास्ते में कुछ बच्चों को बर्तनों में पानी भरकर लाते हुए देखा तो रिपोर्टर ने बच्चों से कारण जानने की कोशिश की तब बालक मोहित (परिवर्तित नाम) ने बताया बस्ती के बाहर पानी का पाइप टूट गया है और पिछले पांच दिनों से हमारे घरों में पानी नहीं आ रहा है जिसके कारण रोजमर्रा के कार्य करने में बहुत समस्या आ रही है। मलिन बस्तियों में कुछ भी सामाजिक समस्या हो तो बच्चे इससे अवश्य ही प्रभावित होते है, उनको दूर पानी भरने जाना पड़ता है जहाँ सड़क पार करना, निर्जन जगह का डर, बोझ लगना और स्कूल जाने वाले बच्चे पानी भरने के कारण स्कूल नहीं जा रहे है क्योंकि उनकी पहली प्राथमिकता अपनी मूलभूत जरूरतों को प्राप्त करना है। इसके अलावा नगर निगम की ओर से बस्ती से 500 मीटर दूर बाजार के बीच एक पानी की छोटी टंकी भी रखी गई है, लेकिन उसकी हालत भी शहर की बस्तियों की ही तरह जर्जर एवं खराब ही हैं। टंकी बाहर से बहुत खराब है और उसके अन्दर पानी भी गन्दा ही होता हैं। हालाँकि हमें लगता है कि शायद हमारी ये समस्या जल्दी ही सुलझ जाएगी पर सोचना यह है की प्रशासन कब इन चीजों के लिए सक्रिय होगा?

सड़कों पर पानी जमा होने के कारण बच्चे पड़े बीमार, फैला संक्रमण

बातूनी रिपोर्टर अजय,
बालक नामा रिपोर्टर सरिता

जब हमारी बालकनामा पत्रकार सरिता ने गुरुग्राम घसोला कांटेक्ट पॉइंट का दौरा किया तो वहां झुग्गी में एक बच्चा मिला जब उस बच्चे से बातचीत हुई तो उसने बताया कि मेरा नाम अजय (परिवर्तित नाम) है और मैं बंगाल का रहने वाला हूं और मैं 10 वर्ष का हूं ' हम यह घसोला गांव में लगभग 5-6 वर्ष से रहते हैं, यहां मेरे पिताजी गार्ड की नौकरी करते हैं और मेरी माता जी दूसरे के घरों में झाड़ू पोछा करने का काम करती है ' आगे अपने बारे में बताते हुए अजय ने बताया कि हमारी झुग्गी के बाहर एक बहुत बड़ी गली है वहां पर हर हफ्ते पानी भर जाता है जिससे हमें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है ' हमें स्कूल जाने में भी दिक्कत होती है और अपने एनजीओ सेंटर पर पढ़ने जाने में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है ' उस पानी के जमने की वजह से हमारी झुग्गी में बहुत से लोग बीमार भी पडते हैं ' अजय ने बताया कि चिकन पॉक्स नामक एक बीमारी हमारे कम्युनिटी में फैल गई है जिससे हमें बहुत बच के रहना पड़ता है ' हमें साफ सफाई का ध्यान भी रखना पड़ता है लेकिन वहां पानी भरने की वजह से हम बीमार पड़ जाते हैं वहां इतना ज्यादा पानी भर जाता है मानो बाढ़ आयी हो ' हमारे सेंटर के भी 10 से 12 बच्चों को यह बीमारी भी हुई थी जिसमें से 6 बच्चे ठीक होकर वापस सेंटर पर आ गए। लेकिन चार से पांच बच्चे अभी भी बिल्कुल ठीक नहीं हो पाए है ' अजय ने बताया कि जिन बच्चों को यह बीमारी होती है उन्हें सबसे अलग रखा जाता है ताकि दूसरे बच्चों को न फैल जाए, यह बीमारी करोना वायरस की तरह तेजी से फैल रही है ' जिससे बच्चे इसकी चपेट में आ रहे हैं उसके बाद अजय ने बालकनामा पत्रकार को बताया की पानी भरने के कारण हमें स्कूल तथा सेंटर पर जाने में बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

बस्ती में गंदे पानी के लगातार जलभराव से बच्चे हुए परेशान

बातूनी रिपोर्टर चांदनी,
बालकनामा रिपोर्टर सरिता

हरियाणा (गुरुग्राम) के बालकनामा पत्रकार सरिता द्वारा गोगा कॉलोनी कांटेक्ट पॉइंट का दौरा करने पर वहां के कम्युनिटी में जाकर वहां के सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मिली तो वहां बच्चों ने बताया कि हमारे यहां गली में बहुत ज्यादा पानी भर जाता है जिससे हमें अपने सेंटर पर पढ़ने जाने में बहुत तकलीफ होती है और इस पानी में इतनी गंदगी होती है कि अगर कोई इस पानी में चला गया तो वह बीमारी का शिकार हो जाएगा जिससे हम अधिकतर बीमार रहते ही हैं। यहाँ पानी भरने का कारण है की सभी कमरों के मालिक अपनी टंकी व गटर का पाइप लाइन खोल देते

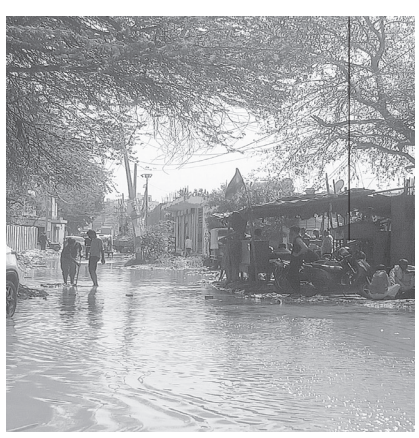

हैं और गली में छोड़ देते हैं जिससे गली में बहुत ज्यादा ही गंदा पानी भर जाता है मजबूरन सभी को वहां से जाना पड़ता हैं जिससे समुदाय में बच्चे अक्सर बीमार पड़ते हैं जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने वहां की निवासी चांदनी से बातचीत कि, की आपको इतनी तकलीफ होती है और आप सेंटर पर भी डेली पढ़ने आते है आप इतनी तकलीफ में भी कैसे पढ़ने आते हैं? तो चांदनी ने बताया की मुझे पढ़ना-लिखना बहुत पसंद है और मैं बड़े होकर अध्यापक बनना चाहती हूं, मैं अपने हर मुसीबत को खुलकर सामना करूंगी और मैं किसी चीज से नहीं डरूंगी चाहे कुछ हो जाए चांदनी की बात सुनकर हमें बहुत खुशी हुई की इतनी सी बच्ची में पढ़ने लिखने का कितना जुनून है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

भंडारे एवं बाजारों में भोजन मांग कर पेट भरते हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चे

रिपोर्टर किशन

पेट की भूख बड़ी खतरनाक होती है इसलिए भीख मांग कर पेट भरना पड़ता है, जी हाँ हम बात कर रहे है दिल्ली के लाजपत नगर मार्केट की जहाँ भ्रमण करने के दौरान पत्रकारों की एक ऐसे बच्चे पर नजर पहुंची जो की मार्केट में आते-जाते लोगों से भोजन मांग रहा था। वह बालक 10 वर्ष का था और उसके पास पहुंचकर जब बालकनामा पत्रकारों ने उसके बारे में जाना तो बालक ने अपनी कहानी और मार्केट में भोजन मांगने का कारण बताया। उसने कहा की मैं अपने माता-पिता के साथ लाजपत नगर मार्केट के आसपास में मौजूद झुग्गी बस्तियों में किराए पर रहता हूं। मैं रोजाना सुबह स्कूल भी जाता हूं और मैं वर्तमान में कक्षा तीन में पढ़ाई कर रहा हूं। घर की स्थिति सही नहीं है जिसके कारण हमें मार्केट में काम करने के लिए आना पड़ता है, इस मार्केट में हमारे माता-पिता और बड़ी बहन आदि लोग भी तरह-तरह का कार्य करते हैं। मैं सुबह पहले स्कूल जाता हूं और फिर स्कूल से आने के बाद में मैं तुरंत अपने खिलौने उठा कर मार्केट में बेचने के लिए आ जाता हूं। हमारे पिताजी बाजार से खिलौने आदि खरीद कर लाते हैं और जिसे बेचने का कार्य मैं करता हूं। खिलौने जैसे ट्रैक्टर, बर्तन, गुड़िया, आदि हर खिलौने के अलग-अलग दाम होते हैं और इन्हें हम हाथ में लेकर घूमते रहते हैं और चिल्लाते रहते हैं की खिलौने ले लो...खिलौने ले लो...मार्केट में घूमते घूमते जिसे खिलौने चाहिए होते हैं वह हमें बुलाकर हमसे खिलौने ले लेते हैं पर हम हाथ में अपना खिलौना सामान

आदि लेकर इसीलिए घूमते हैं क्योंकि एक स्थान पर बैठने नहीं दिया जाता है और मार्केट में जब पुलिस वाले आ जाते हैं तो तुरंत भगा देते हैं सामान छीन लेते हैं। इस कारण हमें घूम-घूम कर बेचना ही पड़ता है। जब हम स्कूल से आते हैं तो माताजी सुबह से ही बाजार में कार्य करने के लिए आ जाती है इस कारण कभी-कभी घर में भोजन नहीं बना पाती हैं, जिस दिन घर पर माताजी भोजन बनाकर आती हैं तो हम स्कूल से आने के बाद उसे खाकर तुरंत मार्केट आ जाते हैं पर जिस दिन नहीं बनाती हैं तो हम मार्केट में आकर मार्केट में आने जाने वाले लोग होटल में रेहडी पर तरह-तरह का भोजन खा रहे होते हैं तो हम भी वहां पर जाकर उनसे मांगने लगते हैं। कुछ लोग होते हैं जो हमारे मांगने के बाद भी नहीं देते और वह गलत व्यवहार करते हैं, वे हमें देखकर अजीब शक्ल बनाते और अपशब्द का प्रयोग भी करते हैं पर कहते हैं ना पांचो उंगली बराबर नहीं होती इस कारण हम इस बात का बुरा नहीं मानते और कुछ लोग मार्केट में ऐसे भी आते हैं जो हमें देखकर तरस खाकर हमें भोजन या फास्ट फूड दिलवा देते हैं जिसे खाकर हम अपना पेट भरते हैं। आपके मन में यह भी सवाल आ रहा होगा कि क्या वह खिलौने में इतना पैसा नहीं कमा पाते कि वह खुद खा पाए? यह बात भी पत्रकारों ने बालक से जानी तो बालक ने बताया कि भैया स्कूल से आने के बाद 100 से 150 रुपए खिलौने बेचकर कमा पाता हूं और इस मार्केट में जितनी चीज मिलती हैं सब 70, 80 रुपए से अधिक मिलती हैं और यदि हम उनही पैसों को खर्च कर देंगे तो घर का खर्च चलाने में दिक्कत का सामना करना पड़ता है। ऐसा नहीं कि हम रोजाना मांगते हैं कभी-कभी मार्केट में या सड़क पर भंडारा भी होता है उसके द्वारा हम अपना पेट भर लेते हैं।

नारियल पानी की रेहड़ी लगाकर पैसे कमाते है बच्चे एवं चलाते है अपना घर खर्च

रिपोर्टर किशन

दिल्ली के लाजपत नगर मार्केट में बालकनामा के पत्रकार पहुंचे और पत्रकारों ने ध्यान दिया कि मार्केट में अधिकतर बच्चे तरह-तरह का कार्य करने में संलिप्त थे, तभी उन्होंने देखा की मार्केट में एक 14 वर्ष का बालक बड़ी सी रेहडी पर नारियल पानी बेचने का कार्य कर रहा था। पत्रकारों ने उस बालक के पास पहुंचकर उसके बारे में जानने का प्रयास किया तब बालक ने बताया की वर्तमान में मैं अपने माता-पिता के साथ दिल्ली में रहता हूँ, मेरे माता-पिता भी काम करने के लिए जाते हैं मतलब मेरे पिताजी फैक्ट्री में काम करने के लिए जाते हैं और माताजी एक अपनी छोटी सी गोली-बिस्कुट की दुकान खोलकर चीज बेचने का कार्य करती है। मैं भी जो नारियल बेचने का कार्य करता हूं यह मेरा खुद का कारोबार है। मैं रोजाना सुबह के 6:00 बजे बाजार जाता हूँ और वहां

से नारियल पानी खरीद कर लाता हूँ फिर घर पर पहुंच कर रेहडी पर नारियल को अच्छे से लगाता हूँ और सुबह के 10:00 बजे तक मार्केट में रेहडी लेकर आ जाता हूँ और फिर रात के 10:00 बजे तक अपनी रेहडी को लेकर घर चला जाता हूँ। मार्केट के इलाके में रेहडी लगाना कोई आम बात नहीं है जिस स्थान पर मैं रेहडी लगाता हूँ इस स्थान का पैसा भी जाता है, जब मैं इस स्थान पर नया-नया आया था तो मुझे रेहडी लगाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था और कोई जगह भी नहीं थी जहां पर एक जगह रेहडी को लगा सकूँ ऊपर से राहत अथॉरिटी वाले रोजाना आकर मेरी रेहडी तोड़ जाते थे एवं नारियल पानी को गिरा देते थे जिसके कारण जितने की कमाई नहीं होती थी उतने का नुकसान रोजाना झेलना पड़ता था। अब वर्तमान में मार्केट के मुखिया को हर महीने के 7000 इस स्थान पर रेहडी लगाने की एवज में जाते हैं। मुझे महीने के 7000 देने पर कोई दिक्कत नहीं आती है क्योंकि इससे पहले मेरा काफी नुकसान हुआ है और मैंने कई लोगों से उधार भी लिया हुआ है पर अब वह वर्तमान में मेरे द्वारा चूका दिया गया है। अब मैं नारियल पानी बेचकर रोज के 400 रुपए से 500 तक का काम करके घर में पिताजी को देता हूं ताकि घर खर्च को चलाने में कोई दिक्कत ना आए।

नशा बना बच्चों के जीवन में नासूर, जिस कारण झेलनी पड़ती है कई परेशानियां

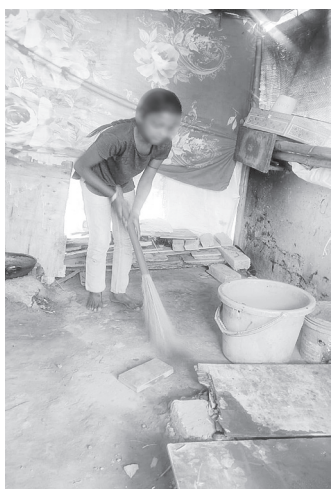

बातूनी रिपोर्टर- नूरजहाना

जब बालकनामा पत्रकार सरिता ने गुरुग्राम के घाटा कांटेक्ट पॉइंट का दौरा किया तो वहां उन्हें झुग्गी में एक बच्ची मिली जिसका नाम नूरजहाना (परिवर्तित नाम) था। बातचीत करने पर उस बच्ची ने बताया कि मैं बंगाल की रहने वाली हूं और मेरी उम्र 12 वर्ष है ' उसने बताया की मैं यहां अपने परिवार के साथ रहती हूँ जिसमें माताजी पिताजी, बड़ा भाई और एक छोटी बहन हैं ' हम यहां गुरुग्राम घाटा गांव में लगभग चार से पांच वर्ष से रह रहे हैं, हमारे घर की अर्थिक स्तिथि ठीक नहीं है क्योंकि मेरे पिताजी बहुत ज्यादा शराब का सेवन करते हैं जिसके कारण हमारे घर में बहुत लडाई-झगड़ा और मारपीट होती हैं ' मेरी माताजी दूसरे लोगों के घरों में झाड़ू-पोछा, बर्तन एवं खाना बनाने का काम करती हैं ' माताजी जो भी पैसा कमा कर लाती है उसे पिताजी, माताजी से लेकर शराब पी लेते हैं जिससे हमें बहुत तकलीफ होती है और हमारे घर में बहुत लडाई-झगड़ा होने लगता है जिससे हमें भरपेट भोजन भी नहीं मिल पाता है' नूरजहाना आगे कहती है कि जो भी पैसे माताजी कमाकर लाती है उसे पिताजी शराब पीने में खर्च कर देते है ' यहां तक कि हम जिस कम्युनिटी में रहते हैं वहां के लोगों के साथ भी पिताजी लड़ाई-झगड़ा कर देते हैं जिससे हमारा रहना मुश्किल हो जाता है ' कई बार तो ठेकेदार ने हमें झुग्गी खाली करने की धमकी भी दे दी हैं कि तुम ऐसे ही सब लोगों को परेशान करोगे तो हम तुम्हें यहां नहीं रहने देंगे अतः तुम लोग अपना नया ठिकाना ढूंढो लो ' अब हम इस महंगाई की दुनिया में कहां कहां भटकेंगे ' इसी वजह से हम स्कूल भी नहीं जा पाते है फलतः अच्छी शिक्षा भी नहीं मिल पाती है ' कभी-कभी तो हमें भरपेट भोजन भी नहीं मिल पाता है और ऐसे में हमें झुग्गी खाली करने को बोला जाए तो हम कहां जाएंगे कैसे अपना गुजारा करेंगे? नूरजहाना आगे कहती है कि पिताजी के शराब पीने के कारण हम तीनों भाई बहन आखिरकार शिक्षा से वंचित ही रह गए '

माता-पिता के दबाव के आगे भिक्षावृत्ति करने को मजबूर है बालिका

बातूनी रिपोर्टर - शगुफ्ता, रिपोर्टर - हंस कुमार

दिल्ली में भिक्षावृत्ति रुकने का नाम नहीं ले रही है खासकर पश्चिमी दिल्ली की बात करें तो लगातार छोटे बच्चे सड़कों पर भिक्षा मांगते हुए दिखाई दे जाते हैं। ऐसा ही एक मामला सामने आया जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिमी दिल्ली के जखीरा का दौरा करने गए तो बच्चो से बातचीत के दौरान वहां के बातूनी रिपोर्टर शगुफ्ता ने उन्हें बताया की उसके घर के पास में ही एक लड़की रहती है जिसका नाम जैनब (परिवर्तित नाम) है, वह नौ वर्ष की है और चेतना एनजीओ द्वारा संचालित लर्निंग सेंटर पर पढ़ने आती है। यहां पर पढ़ने के बाद वह अपने घर जाती है और भीख मांगने के लिए ट्रैफिक लाइट व आस पास के भीड़-भाड़ वाली जगहों पर चली जाती है। उसने बताया की वो ना चाहते हुए भी केवल अपने माता पिता के दबाव में आकर भिक्षावृत्ति के लिए बाध्य है क्योंकि उसके माता पिता स्वस्थ होने के बावजूद कोई काम नहीं

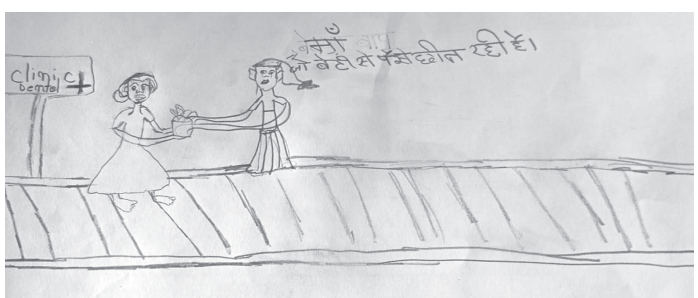

करते। कुछ समय पहले तक उसके पिता एक कारखाने में मजदूरी करते थे लेकिन किन्हीं कारणों से उनका काम छूट गया और वह घर पर ही रहने लगे, अब वो काम की तलाश भी नहीं करते। जिस वजह से घर में आय के सभी संसाधन बंद हो गए हैं। भिक्षावृत्ति के सारे पैसे उसके पिता छीन कर अपने पास रख लेते है और अपनी मनमर्जी से खर्च करते हैं। जैनब सुबह की शिफ्ट में चेतना एनजीओ के पी. सी. सी में पढ़ने जाती है। उसके बाद वह दस से बारह बजे तक भीख मांगती है, फिर वह घर जाकर खाना खाती है और अपने मां के दबाव में दुबारा भीख मांगने के लिए निकल जाती है। यदि वह भीख मांगने से मना करती है तो उसकी मां उसकी पिटाई करती है। भिक्षावृत्ति से आने वाले पैसों के कारण जैनब के माता पिता उसका दाखिला स्कूल में नहीं करवा रहे क्योंकि यदि वो स्कूल जाने लगेगी तो घर में पैसा आना बंद हो जाएगा। इसके अलावा उसे घरेलू काम भी करने पड़ते है। यदि कोई पड़ोसी या शुभचिंतक जैनब के माता पिता से बच्ची से भीख मंगवाने व स्कूल में दाखिला ना करवाने का कारण पूछता है तो वो बोलते है की उनकी बेटी है वो उससे जो मर्जी काम वो करवाएंगे। जैनब पढ़ाई में होनहार है, वो पढ़ लिखकर एक अच्छा इंसान बनने की चाहत रखती है लेकिन पढ़ाई और खेलकूद की उम्र में उसके माता-पिता ने अपने आलस्य और गरीबी के कारण मासूम बच्ची के हाथों में भीख का कटोरा थमा दिया है। भिक्षावृत्ति को रोकने के लिए प्रशासन द्वारा कई अभियान चलाए जा रहे हैं, फिर भी भिक्षावृत्ति नहीं रुक रही है, इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि माता-पिता थोड़े से लालच में अपने बच्चों से भीख मंगवाते हैं।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

दो वक्त की रोटी के लिए ट्रैफिक लाइट पर नींबू मिर्ची बेचने को मजबूर बचपन

बालकनामा रिपोर्टर- राजकिशोर,
बातूनी रिपोर्टर- जावेद

आज हम आपको एक ऐसे बच्चों की कहानी बताने जा रहें है जो की नींबू-मिर्ची बेचकर अपना गुजारा करते हैं। जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर जेएमडी की बस्ती में दौरा करने के लिए गए तो वहां बातूनी रिपोर्टर जावेद मिला और उसनें बताया कि हमारे झुग्गी में कुछ ऐसे बच्चे हैं जो की रेड लाइट पर नींबू-मिर्ची बेचकर अपना गुजारा करते हैं, जब हमारे बालकनामा पत्रकारों को यह बात पता चली तो वे बच्चों से मिलने के लिए उन बच्चों के पास गए और उनसे उनकी परेशानी जानी कि वे बच्चे मिर्ची नींबू रेड लाइट पर क्यों बेचते हैं? उनकी

ऐसी क्या मजबूरी है जो की वह नींबू मिर्ची बेचने पर मजबूर हैं, जब बच्चों से हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर उनसे मिले तो उन्होंने बताया कि हमारी स्थिति बहुत खराब है, हमारे घर में कोई कमाने वाला नहीं है इस वजह से हम लोग रेड लाइट पर नींबू मिर्ची बेचकर अपना गुजारा करते हैं और उन्होंने यह भी बताया कि हम कई-कई बार तो अपनी झुग्गियों का किराया भी नहीं दे पाते हैं क्योंकि हम लोग नींबू मिर्ची बेचते हैं, कोई हमारा नींबू मिर्ची लेता है कोई नहीं लेता है, थोड़ी बहुत कमाई होती है जिससे कि हम अपने खाने का प्रबंध कर लेते हैं हम लोग सुबह से शाम तक रेड लाइट पर नींबू मिर्ची बेचते हैं तब जाकर हमें 300 से 400 रुपए तक की कमाई होती है, कभी-कभी तो 300 रुपए भी कमाई नहीं होती है हमें बिना कमाई हुए अपने घर को वापस आना होता है और उस दिन हम भूखे सोते हैं।

निर्वासित जीवन जी रहे बच्चे अभी भी है शिक्षा एवं विकास से दूर

बालकनामा रिपोर्टर : आकाश,
बातूनी रिपोर्टर : विकास

जयपुर के विद्याधर नगर की जेडीए कच्ची बस्ती में हमारे बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चो द्वारा दी गयी जानकारी को विस्तार से जानने के लिए दौरा किया तो पता चला की सरकारी शौचालयों के पीछे खुले मैदान में लगभग 20 से ज्यादा झुग्गियों में उत्तरप्रदेश से पलायन किये हुए परिवार और बच्चे रहते है। झुग्गियों में लगभग 40-50 से ज्यादा कामकाजी बच्चे है जो की विभिन्न प्रकार की बाल श्रम जैसी गतिविधियों में लिप्त है। बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों से बात की तो बालक आसिफ (परिवर्तित नाम) ने बताया की वह भीख मांगने के लिए पत्थर के दो टुकड़ो को अंगुलियों और अंगूठे की सहायता से किसी वाद्ययंत्र की तरह बजा लेता है, उसे यह कला उसके दोस्त ने सिखाई है जिसका उपयोग वो भीख मांगने के लिए करता है और बालक विकास (परिवर्तित नाम) ने बताया की उसके माता-पिता नहीं है और लगभग दो वर्ष से वह अपनी मौसी के साथ में यूं ही सड़क के किनारे रहता है और अन्य बच्चों के साथ भीख मांगने, कबाड़ा, प्लास्टिक के बेकार सामान एकत्र करके दुकान पर देकर पैसा कमाता है। इस तरह वह 50-60 रुपए तो कमा ही लेता है।

आसिफ और विकास ने कभी अंदर से स्कूल नहीं देखा, ये दोनों झुग्गियों के बच्चो के साथ कभी भीख मांगते तो कभी पत्थर के टुकड़ो की आवाज से हुनर दिखाते। विकास ने बहुत ही उदासीनता से बताया की देने वाले बहुत लोग कहते है की पढ़ाई करो लेकिन उन्हें हम बता ही नहीं पाते कि हम तो हर 6 महीने में परिवार के साथ रोजगार की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह चले जाते हैं। इन बच्चों के बारे में सुनकर ऐसा लगता है क्या यह बच्चे कभी पढ़ पाएंगे ? क्या इनका बचपन रहते हुए इनकी शिक्षा एवं सर्वांगीण विकास सम्भव हो पायेगा?

परिवार पर कर्ज बना जीवन की बाधा, बालक ने छोड़ा स्कूल और थामा ई-रिक्शा

रिपोर्टर किशन

घर की आर्थिक स्थिति जितनी भी कमजोर हो परन्तु जीवन में नियमों का पालन करना तो आवश्यक होता ही है चाहे वह आसान तरीके से निभाना पड़े या फिर कठिन तरीकों से। नोएडा सेक्टर 18 की बाजार में 14 वर्ष का बालक ई-रिक्शा चल रहा था और जब बालकनामा पत्रकार ने उस बालक से मिल कर जानने का प्रयास किया की रिक्शा क्यों चला रहा है? तब बालक ने बताया की हम वर्तमान में नोएडा में किराए के कमरे में रहते हैं। इस से पहले मैं गांव में रहा करता था और मैं गांव में तीसरी कक्षा में शिक्षा प्राप्त करने के लिए रोजाना विद्यालय जाता था लेकिन वहां पर अकेला होने के कारण माता-पिता ने नोएडा बुला लिया ताकि मैं माता-पिता की नजरों के सामने रह सकूँ। नोएडा सेक्टर 18 में आकर पिताजी ने कुछ महीनो बाद मेरा सरकारी स्कूल में दाखिला करवा दिया और फिर मैं रोजाना स्कूल जाने लगा। सब कुछ सही चल रहा था पर कहते हैं ना परेशानी मौका देख कर नहीं कभी भी आ जाती है इस तरह अचानक से दादी की तबीयत खराब हुई और हमने दादी के इलाज में लाखों का कर्जा लिया और दादी का इलाज करवाया परंतु तब दादी ठीक हो गई थी पर कुछ महीनो बाद दादी की मृत्यु हो गई। इस कारण अनेक कार्यक्रम के लिए फिर दोबारा और लोगों से कर्जा लिया और फिर दादी के कार्यक्रम में वह पैसे लगाए पर यह कार्यक्रम खत्म होने के बाद घर में काफी दिक्कतें आने लगी। दिक्कत आने के कारण पिताजी ने मेरा स्कूल से नाम कटवा दिया और मुझे काम करने के लिए कहा, मैंने देखा कि अधिकतर लोग ई-रिक्शा चलाते हैं तो मैंने भी जानकारी प्राप्त किया की ई-रिक्शा कैसे मिले और हम उन्हें किराए पर कैसे चलाएं? तो पास के लोगों ने बताया तुम्हारा कोई जानकारी में होना चाहिए तभी आपको ई-रिक्शा किराए पर चलाने के लिए मिल सकता है। मैंने अपने दोस्तों से जानकारी प्राप्त की और फिर उनके द्वारा ई-रिक्शा वाले मालिक के पास गया और फिर ई-रिक्शा चलाने की बातचीत किया, ई-रिक्शा वाला मालिक रोजाना के 300 रुपए लेता है और बैटरी चार्ज करने के अलग से 350 रुपए रोजाना लगते हैं रोजाना के 650 रुपए जाते हैं और सुबह के 9:00 बजे से ई-रिक्शा चलाना स्टार्ट करते हैं और फिर रात में 9 बजे तक चालते हैं तब जाकर बैटरी का और मालिक का पैसा निकाल ने के बाद 400 रुपए रोजाना कमा के घर में पिताजी को देता हूं ताकि मेरे पैसों से घर का खर्चा चले और माता-पिता के पैसों से कर्जा चुकाया जा सके।

मां-बाप के ध्यान न देने की वजह से बच्चे कर रहे हैं नशा

बातूनी रिपोर्टर रोहन,
बालकनामा रिपोर्टर सरिता

हमारी बालकनामा रिपोर्टर सरिता ने जब गुरुग्राम (हरियाणा) के एम आर टावर बस्ती का दौरा किया तो वहां की एक झुग्गी में रोहन (परिवर्तित नाम) नाम का बच्चा मिला जिसकी उम्र 8 वर्ष है ' रोहन बंगाल का रहने वाला है और रोजगार की तलाश में उसका पूरा परिवार बंगाल से गुरुग्राम के बादशाहपुर में रहने आया हैं ' रोहन ने बताया कि मेरी माताजी दूसरों के घरों में साफ सफाई का काम करने जाती है और पिताजी किसी कारण वश जेल में है। इसके अलावा एक बड़ा भाई है जिसकी उम्र 11 वर्ष है जो गली के आवारा फालतू लड़कों के साथ रहकर नशा करता है ' इसके बारे में विस्तृत कर रोहन ने बताया कि वह पहले चेतना संस्था में पढ़ने जाता था लेकिन अब नशा करने की वजह से उसने पढ़ाई-लिखाई छोड़ दी हैं ' अब उन सब लडको के साथ वह नशा करता है जो कि उसके लिए बहुत नुकसानदायक है क्योंकि वो सारे लड़के पढ़ते भी नहीं हैं, यहाँ तक की उनके माता-पिता भी उन्हें कुछ नहीं बोलते है क्यूंकि वह सब काम पर चले जाते हैं और उसके बाद वह सब बच्चे अपनी मनमानी करके नशा करके घूमते रहते हैं" जब हमारी बालकनामा पत्रकार सरिता ने रोहन के भाई से बातचीत कि तुम अब सेंटर पर पढ़ने क्यों नहीं जाते हो? तो रोहन के भाई ने बताया कि अब मेरा पढ़ाई लिखाई में मन नहीं लगता है '

चेतना एनजीओ सेंटर से कई बार मुझे बुलाने आये लेकिन मैं नहीं गया क्यूंकि मेरी माता जी मुझे काम करने के लिए बोलती है ' इसके बाद हमने पूछा कि तुम नशा क्यों करते हो? तो उसने बोला की हमें इन चीजों की आदत हो गई है अगर हम नशा नहीं करते हैं तो हमारा सर दर्द इत्यादि होता है क्यूंकि अब हमें नशा करने की लत लग गयी हैं' उसके बाद हमने पूछा कि तुम अपनी लाइफ में कुछ बनना नहीं चाहते हो या तुम्हारा कोई सपना नहीं है? तो उसने बताया कि हमें बड़े होकर एक अमीर आदमी बनना चाहता हूँ, लेकिन हम इतने गरीब हैं कि कुछ कर नहीं सकते हैं' हमारे पिताजी भी हमारे साथ नहीं है, जिसके कारण मेरी माता जी मुझे बोलती है कि तुम काम करने जाओ और कुछ पैसे कमाओ जिससे की हमारा घर का खर्चा चल सके अब आप ही बताइये ऐसे में मैं पढ़ाई कैसे करूंगा? मेरा भी एक सपना था कि मैं पढ़ लिखकर बहुत बड़ा बिजनेसमैन बनूंगा और अपने माता-पिता के साथ में रहूंगा परन्तु अब तो लगता की है की जीवन ऐसे ही बीत जायेगा।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

चंद पैसों के लिए जान जोखिम में डाल कर बच्चे चलती ट्रेन से बीनते है कबाड़

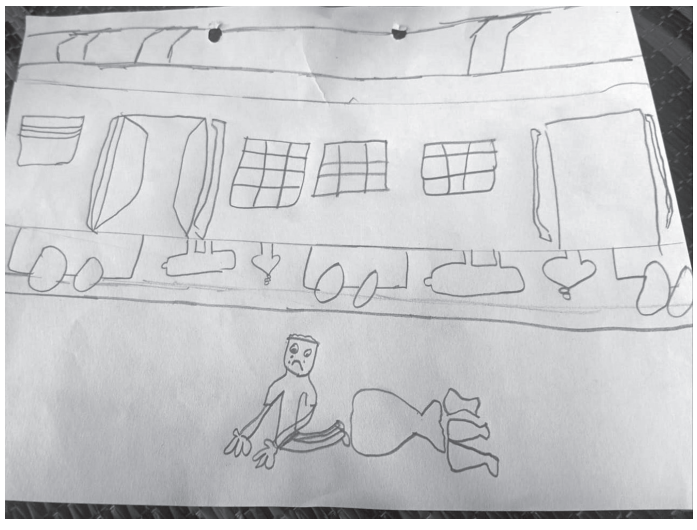

बातूनी रिपोर्टर - यासिर,
बालकनामा रिपोर्टर- हंस कुमार

रेलवे स्टेशनों, ट्रेन की बोगियों और सार्वजनिक स्थानों पर बच्चे अक्सर खाली बोतल व कूड़ा इत्यादि चुनते हुए दिख जाते है। गरीब होने के कारण वह यह काम करने को मजबूर है। ऐसा ही एक मामला प्रकाश में आया जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिम दिल्ली के शकुर बस्ती का दौरा करने गए तो उन्होंने वहां के बातूनी रिपोर्टर यासिर ने बताया की कुछ समय पहले वो अपनी माता के साथ किसी काम से सदर बाजार गया था। वहां से वापस आने के लिए उसने ट्रेन से यात्रा करने का सोचा और जखीरा के नजदीक रेलवे स्टेशन पहुंचा। लगभग दिन के ग्यारह बज रहे होंगे उसने देखा की एक लोकल पैसेंजर ट्रेन के स्टेशन पर आकर रुकते ही, सात आठ बच्चो का झुंड अपने कंधो पर झोला लेकर ट्रेन के अंदर चढ़ा और बोतल और अन्य कबाड़ा चुनकर अपने झोले में डालने लगे, कुछ ही देर बाद ट्रेन ने हॉर्न दिया और धीरे धीरे चलने लगी तो सारे बच्चे हड़बड़ी में ट्रेन से उतरने लगे लेकिन एक बच्चा उतर नहीं पाया क्योंकि ट्रेन धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ रही थी और उसके कंधे पर वजन भी ज्यादा हो गया था। घबराहट में उस बच्चे ने चलती ट्रेन से छलांग लगा दी जिसके कारण उसके हाथ पैरों में चोटें आ गई। उसके साथी लड़कों ने उसे उठाया और वहां से ले गए, वो बच्चा लड़खड़ाते हुए धीरे चल रहा था। यासिर ने उनमें से एक बच्चे से पूछा की वो ये काम क्यों करतें है और बोतल इकट्ठा करके इसका क्या करेंगे? कबाड़ चुनने वाले बच्चे ने बताया कि उसका परिवार शकूर बस्ती में रहता है, उसके पिता को शराब की लत है, घर खर्च के लिए उसके पिता, मां को कुछ नहीं देते। इसी वजह से उसकी मां कूड़ा चुनकर और बेचने के लिए उसे रेलवे स्टेशन भेजती हैं। बच्चा बताता है कि वह कूड़ा बेचकर हर दिन 100 से 150 तक रुपये कमा लेता है। वो दिन भर में जो कुछ भी कमाता है, उसे अपनी मां दे देता है। यासिर ने बताया की वहां कूड़ा चुनने वाले बच्चों की बड़ी संख्या है इसलिए उन सबके बीच आपस में प्रतिस्पर्धा भी होती है। जो बच्चा ट्रेन में सबसे पहले चढ़ता है वह अधिक खाली बोतलें व कबाड़ा इकट्ठा कर लेता है। प्रतिस्पर्धा के कारण बच्चे प्लेटफार्म पर ट्रेन रुकने का इंतजार नहीं करते बल्कि स्टेशन के आउटर पर पहुंचते ही ट्रेन में चढ़ जाते हैं इससे बच्चे कई बार दुर्घटना का शिकार भी हो जाते है।

पत्नी को छोड़ने के कारण लग गई शराब की लत, अब पिता ही कर रहे बेटी को अनदेखा

बातूनी रिपोर्टर - पुनीत एवम
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिमी दिल्ली के वाल्मिकी कैंप का दौरा करने गए तो उन्हे वहां के बातूनी रिपोर्टर पुनीत ने बताया कि उसके घर के पास एक लड़की रहती है जिसका नाम करीना (परिवर्तित नाम) है वह नौ वर्ष की है और पांचवी कक्षा में पढ़ती है। उसके पिता रोजाना शराब पीकर नशे में रहते है, उसके घर में फिलहाल चार सदस्य रहते है अनुष्का. उसके पिता, दादी और बुआ, कुछ समय पहले तक उसकी मां और छोटी बहन भी साथ में रहते थे लेकिन उसके माता-पिता के बीच रोजाना के आपसी लड़ाई-झगडे के कारण एक दिन रात के समय उसकी मां उसकी छोटी बहन को लेकर घर से चली गई। जिसके कारण उसके पिता को गहरा झटका लगा और उन्होंने तनाव में आकर शराब की बुरी लत पकड़ ली। अब वह जब भी घर आते तो नशे की हालत में होते है और वो करीना को नजरंदाज करते है पहले की तरह अब उसका ध्यान नहीं रखते और बोलते है की उसकी शक्ल उसकी मां से मिलती है, इसलिए वो उससे नफरत करते है। उसकी बूढ़ी दादी उसके पिता को भरसक समझाने

की कोशिश करती है की बच्ची का इसमें क्या दोष है लेकिन वो उनकी नहीं सुनते, ज्यादा बोलने पर दादी को भी सांस लेने में तकलीफ होती है। उसकी बुआ की भी तबीयत अकसर खराब रहती है। उसके पिता अब उसके लिए जरूरत का सामान तक नही खरीदते, नए कपड़े भी नही दिलवाते और स्कूल की कॉपी, पेन-पेंसिल इत्यादि खरीदने के भी पैसे नहीं देते। हाल ही में उसके स्कूल के जूते फट गए थे लेकिन उसके पिता ने नए जूते नहीं खरीदे। पिता द्वारा की जा रही अनदेखी के कारण उसका स्कूल जाना भी छूट गया है। उसका अभी भी स्कूल जाने का बहुत मन करता है लेकिन आवशयक सामान के आभाव में वो नहीं कही नहीं जाती है।

पानी के टैंकर से हुआ सड़क एवं कामकाजी बच्चे का एक्सीडेंट

बातूनी रिपोर्टर सुमित.
बालकनामा रिपोर्टर राज किशोर

आज हम आपको एक ऐसी घटना के बारे में बताने जा रहे हैं जिस घटना से सड़क पर काम करने वाले बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है, जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने वजीराबाद बस्ती, गुरुग्राम का दौरा किया तब पत्रकारों ने कामकाजी बच्चों से बातचीत की और बातचीत के दौरान बच्चों ने बताया कि कुछ दिनों पहले की बात है जब दो-तीन बच्चे साईं बाबा मंदिर के पास खेलने जा रहे थे तभी उधर से एक पानी का टैंकर आ रहा था, वह बच्चे वहां पर खड़े थे कि वह पानी का टैंकर आ रहा है फिर उसके बाद हम जाएंगे और जैसे ही बच्चे आगे चलते हैं पानी का टैंकर पीछे की ओर आता है जिसके कारण एक बच्चे को चोट लग गई जिससे वह बच्चा बहुत ही ज्यादा रोने लगा जिस कारण वहां के आसपास की झुग्गियों में रहने वाले लोग इकट्ठा हो गए कि उस बच्चे को क्या हो गया? जिस कारण वह इतना ज्यादा चीखने चिल्लाने और रोने लगा, तभी वहां सारे लोग इकट्ठा हो गए और देखते हैं कि उसके पैर से बहुत ज्यादा खून निकल रही है तब उन्होंने बच्चों से पूछा की क्या हुआ चोट कैसी लगी? तब उन्होंने बताया कि पानी का टैंकर एकदम से पीछे की ओर आ गया जिससे वह उसके नीचे आ गया जिसकी वजह से उसको चोट लग गई। ये सब सुनकर वे लोग बहुत ही ज्यादा क्रोधित हो गए और उस पानी के टैंकर वाले को मारने-पीटने लगे और उन्हें बोलने लगे कि तुम कैसे चलाते हो? तुम्हारी वजह से एक बच्चे की जान जाते-जाते बची है अगर बच्चे को कुछ हो जाता तो उसका क्या होता, आपसी बहस एवं समझाइश के बाद उस पानी के टैंकर वाले ने उस बच्चे का इलाज करवाया लेकिन इस घटना से बच्चों मे डर का माहौल है की अब तो घर के आसपास खाली जगह पर भी बच्चे सुरक्षित नही है।

उपद्रवी किशोरों के कारण कम उम्र के बच्चे कर रहे नशीले पदार्थो का सेवन

बातूनी रिपोर्टर सुमित,
बालकनामा रिपोर्ट राजकिशोर

आज हम आपको एक ऐसी घटना के बारे में बताने जा रहे है जिसके कारण बच्चों के जीवन प्रभावित हो रहा है, यह घटना है वजीराबाद के पीछे वाली बस्तियों में जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर वजीराबाद की बस्तियों में दौरा करने के लिए गए तो वहां सुमित (परिवर्तित नाम) नाम का बच्चा मिला, सुमित ने बताया कि यहां साईं मंदिर के आगे 15 साल से कम उम्र के बच्चे बैठते है और वो बच्चे नशा करते है एवं मारपीट भी करते हैं और जो छोटे बच्चे होते हैं उनके पास कोई भी चीज रहती है, तो उनसे मारपीट कर उनसे छीन लेते हैं और वह बच्चे जो सामान नहीं देते हैं, तो उनको गंदी-गंदी गालियां देते हैं और उनके साथ मारपीट भी करते हैं। जब ये बच्चे अपने माता-पिता से जाकर बताते हैं की साईं मंदिर के आगे कुछ बच्चे नशा

करते हैं और हमारा सामान छीन लेते हैं, हमें मारते भी हैं तब उनके माता-पिता उनको समझाने के लिए जाते हैं, तो वे उद्दंड बच्चे उनसे भी बहुत ही गंदी तरीके से बात करते हैं और गालियां भी देने लगते हैं। सुमित ने बताया कि एक दिन तो उन बच्चों ने हद ही कर दी एक बच्चों को जबरदस्ती नशा करवा रहे थे और सुमित ने यह भी बताया कि वह अपने घर से पैसे चोरी करके जुआ भी खेलते हैं और कई प्रकार के नशा भी करते हैं जैसे सिगरेट, दारू एवं गांजा इत्यादि।

बच्चे ने दिखाई प्रतिभा, अनुपयोगी सामान से बनाया सोलर पैनल

बातूनी रिपोर्टर अजरुल,
बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर

समाज का हर बच्चे में अपना एक अलग गुण या प्रतिभा है ऐसे ही हम आपको एक ऐसे सड़क एवं कामकाजी बच्चे के बारे में बताने जा रहें है जिसने अपनी प्रतिभा से सोलर पैनल बना दिया।

जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर वजीराबाद के बस्तियों में गए और जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर बस्तियों में बच्चों से बात कर रहे थे तो एक बच्चे ने बताया कि हमारे बस्तियों में एक बच्चे ने सोलर पैनल बनाया है तो हमारे रिपोर्टर आश्चर्य चकित रह गए की एक छोटा बच्चा, जो की बस्तियों में रहता है उसकी सोच इतनी बड़ी और इतनी अच्छी हो सकती है यह तो हमने कभी सोचा भी नहीं था।

जब हमारे बालकनामा रिपोर्टर उस बच्चे से मिलने के लिए गए तो उस बच्चे ने बताया कि मैं बड़े होकर एक इंजीनियर बनना चाहता हूं, और मैं देश की सेवा करना चाहता हूं। जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर ने उनसे यह पूछा कि आपने सोलर पैनल कैसे बनाया तब बच्चे ने बताया कि मैंने बेकार मटेरियल से सोलर पैनल बनाया जिसमें मैंने मोटर, पंखे, बैटरी आदि सामानों का उपयोग किया है, ऐसे ही मैं बड़े होकर इंजीनियर बनूँगा और मैं देश के लिए ऐसे ही अनोखी चीजों का आविष्कार करूंगा जिससे कि हमारे देश के लोगों को और हमारे देश को उसका लाभ मिल सके।

घर-घर जाकर पौधे बेचकर करता हूं परिवार की मदद

बातूनी रिपोर्टर जुनैद व रिपोर्टर किशन

नोएडा में जब बालक नामा के पत्रकार बच्चों के साथ बातचीत करने के दौरान यह जानने का प्रयास कर रहे थे कि इस स्थान पर ऐसे कितने बच्चे हैं जो तरह-तरह का काम करते हैं तब बस्ती में रहने वाले 11 वर्ष के एक बालक से मुलाकात हुई और बालक ने अपना परिचय देते हुए बताया की मेरा नाम मनीष (परिवर्तित नाम) है और मैं वर्तमान में नोएडा सेक्टर 101 के पास झुग्गी डालकर अपने माता-पिता के साथ रहता हूँ। इस स्थान पर रहकर मैं कुछ काम भी करता हूँ, मेरे घर में चार सदस्य हैं; माता-पिता, एक बहन एवं एक भाई। हमारी खुद की पौधे की दुकान भी है, मैं रोजाना सुबह उठता हूं और दिन भर पौधे की देखभाल करना और अगल-बगल की बिल्डिंगों में जाकर पौधे लगाने का काम भी करता हूँ। सुबह से दोपहर तक मैं पौधों में पानी, दवाई खाद इत्यादि डालता हूँ और उनकी घास भी काटता हूँ। यह पौधे हम दूर-दूर से खरीद कर लाते हैं, पिताजी

यह पौधे फोन के द्वारा मंगवा लेते हैं और कभी-कभी लेने भी जाना पड़ता है तो पिताजी ही पौधे लेने के लिए जाते हैं। मैं और माताजी दुकान संभालते हैं मेरे पास एक छोटी सी रेहडी भी है और जब कभी कहीं जाना होता तो मैं इस रेहडी से जाता हूँ। अगल-बगल में जितनी भी बिल्डिंग बनी हुई है उन बिल्डिंग में कई लोगों को पौधे लगवाने होते हैं तो वह हमारे पास फोन करते हैं और कहते हैं कि हमें पौधा लगवाना है तो हम उन्हें पौधे के दाम बताते है और वे जो पौधा कहते हैं वही पौधा हम लेकर जाते हैं। पौधा लगाने के लिए हम रेहडी में एक गमला, पौधा और मिट्टी रखते हैं और फिर फ्लैट में जाकर पौधा लगाते हैं। सभी पौधों के अलग-अलग दाम होते हैं 50 रुपए से शुरू होकर और जितना बड़ा पौधा चाहिए उतना दाम होता है। जब हम घर पर पौधा लगाने के लिए जाते हैं तो पौधा लगाने के भी अलग से पैसे लेते हैं अर्थात एक पौधा लगाने के हम 30 रुपए लेते हैं। ऐसे ही पूरे दिन में 10-20 पौधे बिल्डिंगों में जाकर लगा देते हैं और पौधे लगाने के बाद घर पर आकर खाली समय पर पढ़ाई भी करता हूँ और इस तरह पौधे लगाकर घर का खर्चा चलता है।

जोकर का वेश धारण कर बच्ची के अपहरण को देने वाले थे अंजाम, दोस्तों की सूझ-बूझ ने बचाई बच्ची की जान

बातूनी रिपोर्टर - लावण्या,
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिमी दिल्ली के शहीद कैंप का दौरा करने गए तो उन्हे वहां की बातूनी रिपोर्टर लावण्या ने बताया कि 13 मार्च को शहीद कैंप में उस वक्त हड़कंप मच गया जब जोकर का रूप धारण किए हुए तीन बेहरूपियों ने स्कूल की छुट्टी के बाद घर जा रही एक बच्ची जो अपने दोस्तो के समूह से अलग चल रही थी उसका पार्क के पास अपहरण करने का प्रयास किया तभी पीछे से आ रही बालकनामा की बातूनी रिपोर्टर लावण्या ने ये सब होते हुए देख लिया और अपनी सूझ-बूझ का परिचय देते हुए उसने शोर मचाया और दौड़कर अन्य बच्चो के पास गई और उन्हें

संक्षेप में घटना की सूचना देकर उन्हें घटनास्थल पर तुरंत एकत्रित कर लिया और अपहृता तीनों जोकरों को मौके पर ही धर दबोचा। उनकी पिटाई की लेकिन किसी बच्चे के पास मोबाइल फोन न होने के कारण पुलिस को इस घटना की सूचना नहीं दे पाए। इतने में मौके का फायदा उठाकर वो तीनों अपहरणकर्ता मौके से फरार होने में कामयाब हो गए। भले ही अपहरणकरता भागने में कामयाब हो गए हो लेकिन लावण्या की सूझ-बूझ और उसके दोस्तो की मदद से एक मासूम बच्ची का अपहरण होने से बच गया। आजकल ऐसे बहुत से गिरोह सक्रिय है जो वेशभूषा बदलकर छोटे-छोटे गुट बनाकर घूमते है और बच्चों को अगवा करने की फिराक में रहते है। लावण्या ने बताया कि अब बच्चों को स्कूल से वापस पार्क के रास्ते से घर जाने में और पार्क में खेलने से डर लगता है इसलिए काफी सारे बच्चे तो अब पार्क में खेलने जाते ही नहीं है और अनेक बच्चों ने अपना रास्ता बदल लिया है।

महावारी स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

बालकनामा रिपोर्टर :काजल,
बातूनी रिपोर्टरः लक्ष्मी

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने मांग्यावास बस्ती का दौरा किया तब कुछ महिलाओं एवं किशोरियों को आपस में बातचीत करते हुए देखा तो रिपोर्टर भी उनके साथ बैठ गई और किशोरियों से उनके जीवन मे होने वाली घटनाओं, समस्याओं एवं अनुभवों के बारे में जानने का प्रयास किया तब बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी ने बताया कि कुछ दिनों पहले चेतना के शिक्षा केंद्र से सेनेटरी पैड का वितरण किया गया था और महावारी के दौरान आने वाली समस्या एवं इस दौरान रखी जाने वाली सावधानियां व स्वच्छता के बारे में बताया गया था। बालिका लक्ष्मी ने बताया की इस कार्यक्रम में मैं अपनी मां के साथ शामिल हुई थी और मेरी मां ने मुझे माहवारी के दौरान कपड़े का उपयोग करना बताया था इसलिए मुझे पैड का इस्तेमाल कैसे किया जाता है इसके बारे में जानकारी नही थी । इस कार्यक्रम के माध्यम से सैनिटरी पैड का उपयोग क्यों जरूरी है और सेनेटरी पैड कैसे उपयोग में लिया जाता है इसके बारे में बताया गया। इस कार्यक्रम में मेरी मां भी शामिल हुई थी इससे उनकी सोच में भी बदलाव आया है। बालिका लक्ष्मी ने मुस्कुराते हुए कहा का अपनी सुरक्षा के लिए अब से मैं पैड का ही इस्तेमाल करूंगी और मेरी सहेलियों को भी इसके बारे में बताऊंगी।

फोन की लत से बचाने के लिए पिता ने लगाई फटकार, बच्चे ने गुस्से में आकर छोड़ा घर

बातूनी रिपोर्टर- बादशाह,
बालकनामक रिपोर्टर-राजकिशोर

जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर जलवायु टावर की बस्तियों में विजिट करने के लिए गए तो हमारे रिपोर्टर को बातूनी रिपोर्टर बादशाह ने बताया कि हमारी बस्तियों में ही एक बच्चा रहता है, जो कि प्रतिदिन स्कूल जाता है लेकिन एक दिन ऐसा हुआ कि उसके पापा ने उसको मारा जिस वजह से वह बच्चा रात में घर से भाग गया और फिर उसके माता-पिता ने उसे बहुत ढूंढा परन्तु जब वो नहीं मिला तो वे परेशान होकर बहुत रोये और उसके बाद माता-पिता ने फिर पुलिस थाने में जाकर रिपोर्ट दर्ज करवाई। आखिरकार पुलिस ने उस बच्चे को ढूंढ निकाला और पुलिस वाले ने उनके

माता-पिता से बोला कि बच्चों को नहीं मारना चाहिए, छोटी-छोटी बातों के लिए बच्चे नाराज हो जाते हैं इस वजह से वह ऐसा कदम उठाते हैं और पुलिस वालों ने यह भी बोला कि बच्चों को जितना समझा के रखें उतना ही ठीक है अन्यथा वह गलत कदम उठाते हैं। जब हमारे रिपोर्टर उस बच्चे से मिलने के लिए गए तो रिपोर्टर ने उनसे पूछा कि ऐसी क्या मजबूरी आ गई की आप घर से भाग गए थे और ऐसा कदम क्यों उठाया, तब उस बच्चे ने बताया कि मैं बहुत ज्यादा फोन देखा करता था इस वजह से मेरे पिताजी ने मुझे मारा और इस कारण मुझे गुस्सा आया और मैं घर से भाग गया। हमारे रिपोर्टर ने उनसे बोला कि आप ऐसे गलत काम मत किया करो, आपके पता नहीं की आपके मां-बाप को कितनी ज्यादा परेशानी उठानी पड़ी आपकी वजह से और उस बच्चे ने बोला कि अब मैं ऐसी गलती नहीं करूंगा और मैं अब फोन भी ज्यादा नहीं देखूंगा जिससे हमारे माता-पिता को परेशानी न उठानी पड़े।

घर खर्च में मां की आर्थिक मदद करने के लिए काम करने को मजबूर मासूम

बालकनामा रिपोर्टर : आकाश,
बातूनी रिपोर्टर : रिहान

बालकनामा रिपोर्टर आकाश ने जयपुर की कच्ची बस्ती का दौरा किया और बच्चों से उनकी समस्या और अनुभव जानने के लिए बातचीत की तब 12 वर्षीय बालक रिहान (परिवर्तित नाम) ने अपने बारे में बताया की मेरा स्कूल जाने का बहुत मन होता है और मैं कक्षा छठी में पढ़ता भी हूं लेकिन मैं प्रतिदिन विद्यालय नहीं जा पाता हूं। क्योंकि मैं घर में मां की आर्थिक रूप से कुछ मदद कर सकूं इसके लिए मैं काम करता हूं और इसी कारण मैं प्रतिदिन स्कूल नहीं जा पाता और अब तो लगता है की शायद इस कारण मेरा स्कूल से नाम भी कट जाये। वैसे अगर मैं अपने बारे में बताऊँ तो हम तीन बहन-भाई हैं और हमारे पिता हमारे साथ नहीं रहते हैं, मैं अपने चचेरे भाई के साथ जयपुर के प्रसिद्ध पर्यटक स्थल हवामहल के बाहर फोटोग्राफी की जो दुकान लगी है वहां पर काम करता हूं और वहां पर आने वाले पर्यटकों को जोर-जोर से आवाज लगाकर फोटो खींचने के लिए बुलाता हूं। जब बालकनामा रिपोर्टर आकाश ने पूछा कि इस काम को करने से कितने रुपए मिलते हैं तब बालक रिहान ने बताया कि प्रत्येक ग्राहक पर मुझे 50 रुपए मिलते हैं जब छुट्टियों का माहौल होता है और पर्यटक ज्यादा आते हैं तो मुझे रोज के लगभग 250 रुपए मिल जाते हैं और सामान्य दिन में कम से कम 150 रुपए मिल जाते है इन पैसों को मैं अपनी मां को देता हूं ताकि घर खर्च में काम आ सके।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471